भारत–रूस संबंध :- अतीत, वर्तमान और भविष्य

Prof.(Dr.) Anant Prasad Gupta*
Department of History, Purnea University, Purnea
*Corresponding Author:anantgupta943@gmail.com

सारांश: यह लेख भारत–रूस संबंधों को ऐतिहासिक , क्षेत्रीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में तथा दोनों देशों के वैचारिक और राजनीतिक विमर्श के संदर्भ में प्रस्तुत करता है। इसमें तर्क दिया गया है कि यद्यपि भू हित भारत- राजनीति और राज्य-–सोवियत संबंधों के तत्कालीन, और यहाँ तक कि अनिवार्य, कारण हो सकते थे, लेकिन उनका एक साथ आना दोनों देशों के आंतरिक राजनीतिक विमर्श के अनुरूप भी था।

लेख ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है, जैसे:

- वैश्विक राजनीति में और भारत के लिए रूस क्यों महत्वपूर्ण है?
- किन मुद्दों पर दोनों देशों के विश्वदृष्टिकोण और राष्ट्रीय हित मिलते हैं-?
- भारत–रूस संबंधों के प्रमुख अवसर और चुनौतियाँ क्या हैं?

लेख में यह भी तर्क दिया गया है कि इन संबंधों को स्थिरता प्रदान करने के लिए दोनों देशों को कुछ वैचारिक या विचारधारात्मक समानताएँ खोजनी और उन पर सहमति बनानी आवश्यक है।

.

[Gupta, A.P. **संबंध :- अतीत , वर्तमान और भविष्य** . *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2024; Volume 3, Issue 1:46-56 (July to September). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

प्रमुख शब्द

सोवियत संघ, भारत, रूस, संयुक्त राष्ट्र, वैश्विक व्यवस्था, चीन, पाकिस्तान, विचारधारा, बहुसांस्कृतिक, बहुजातीय।-

परिचय

13 अप्रैल 2017-2025 को, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र**भारत**और क्षेत्रफल के आधार पर दुनिया का सबसे बड़ा देश**रूस**ने अपने कूटनीतिक संबंधों के 75 वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाया। इस संबंध की विशेषता **शुद्ध मित्रता की भावना**रही है मि)खाइलोव, 2022)। सेंट पीटर्सबर्ग शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच हुई वार्ता के बाद जारी **संयुक्त घोषणा पत्र**में कहा गया—

“भारत–रूस का विशेष और विशेषाधिकारयुक्त रणनीतिक साझेदारी, दो महान शक्तियों के बीच आपसी विश्वास का एक अद्वितीय संबंध है।”

(प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया]PTI], 2017)

स्वतंत्रता के बाद से भारत के विकास में रूस के उदार समर्थन की प्रशंसा करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में कहा था—

“भारत में अगर किसी बच्चे से पूछा जाए कि भारत का सबसे अच्छा मित्र कौन है , तो वह उत्तर देगा —रूस, क्योंकि संकट के समय रूस हमेशा भारत के साथ खड़ा रहा है।”

(PTI, 2014; सिम्हा, 2015)

आज दोनों देशों का नया नेतृत्व बदलते हुए वैश्विक भू - राजनीतिक परिदृश्य के साथ कदम मिलाने का प्रयास कर रहा है। दिमित्री त्रेनिन
दिमित्री त्रेनिन का मानना है कि मई 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चुने जाने के बाद यह भारत के लिए एक**नए युग की शुरुआत**है।

वही वर्ष रूस के लिए भी भाग्यनिर्णायक साबित हुआ , जब व्लादिमीर पुतिन के नेतृत्व में देश को **यूक्रेन संकट** के बाद पश्चिमी देशों के साथ संबंधों के बिगड़ने का सामना करना पड़ा।

भारत, समाजवाद और सोवियत संघ

भारत–रूस (1991 से पहले भारत –सोवियत) संबंधों को अक्सर “विशेष”, निकट और मित्रतापूर्ण कहा गया है। इस संबंध की जड़ें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कई नेताओं पर**समाजवादी और मार्क्सवादी विचारों** के गहरे प्रभाव में खोजी जा सकती हैं।

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (कोमिन्टर्न) की **दूसरी कांग्रेस** (19 जुलाई–अगस्त 1920) विशेष रूप से उस जीवंत बहस के लिए याद की जाती है , जो**लेनिन**और युवा भारतीय

कम्युनिस्ट**मनवेन्द्र नाथ रॉय** के बीच उपनिवेशों में स्वतंत्रता आंदोलन के समर्थन के प्रश्न पर हुई थी। रॉय **पूंजीपति वर्ग के नेतृत्व वाले स्वतंत्रता आंदोलन** के विरोधी थे और उनका मत था कि कोमिन्टर्न को उपनिवेशों के **मजदूर वर्ग और किसान वर्ग**को संगठित कर इन आंदोलनों को क्रांतिकारी संघर्ष में बदलना चाहिए (Haithcox, 1963; Roy, 1964, 1997, पृ. 93, 375–382, 43–46)। इस प्रकार लेनिन और अन्य कम्युनिस्ट नेता उपनिवेशों के प्रश्न और भारत जैसे देशों के स्वतंत्रता आंदोलनों के समर्थन के तरीकों पर गंभीरता से विचार कर रहे थे।

जवाहरलाल नेहरू , **सुभाष चंद्र बोस** , **कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी**का गठन , **भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी** और**हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन/आर्मी**की स्थापना, तथा स्वतंत्रता के बाद भारत द्वारा**समाजवाद**और**राज्य नियोजन**को अपनाना—ये सभी इस बात के प्रमाण हैं कि भारत के आधुनिक इतिहास में समाजवादी विचारधारा और सोवियत संघ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

1930 के दशक में **मार्क्सवाद**ने नेहरू को एक विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में आकर्षित किया , जिससे वे ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को समझते थे। उन्होंने अपनी पुस्तक **'ग्लिम्प्सेज़ ऑफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री'**में मार्क्सवादी शब्दावली और विश्लेषण का उपयोग किया। नेहरू समाजवाद को गरीबी समाप्त करने और न्यायपूर्ण व समान आर्थिक–सामाजिक विकास प्राप्त करने का साधन मानते थे। उनका विश्वास था कि **सोवियत संघ**ने इस लक्ष्य को हासिल कर लिया है।

1927 में**मास्को**की अपनी यात्रा के बाद उन्होंने सोवियत रूस की उपलब्धियों की सराहना करते हुए एक पुस्तक लिखी। उन्होंने कहा—

"सारा संसार रूस को देख रहा है —कुछ लोग भय और घृणा के साथ, और अन्य लोग उत्सुक आशा और उसकी राह पर चलने की लालसा के साथ।"

(नेहरू, 1928, पृ. 3)

1931 में कराची अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने**समाजवाद**पर एक प्रस्ताव पारित किया , जिसे नेहरू ने प्रस्तुत किया, और "एक बहुत छोटा लेकिन महत्वपूर्ण कदम समाजवाद की दिशा में" बढ़ाया (Sachi, 1964, पृ. 1229)।

इसके बाद, **सुभाष चंद्र बोस**ने कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में राज्य स्वामित्व और राज्य नियंत्रण के तहत आर्थिक और औद्योगिक विकास के समाजवादी मार्ग को**अनिवार्य**बताया (Bradley, 1938)। उन्होंने एक **राष्ट्रीय योजना समिति**का भी गठन किया।

स्वतंत्रता से पहले नेहरू ने विकास की समस्याओं पर गहन विचार नहीं किया था , हालांकि वे समाजवादी ढांचे में नियोजन के पक्षधर थे (Sachi, 1964, पृ. 1229)। 1933 में उन्होंने**'व्हिदर इंडिया ?'**शीर्षक से लेखमाला लिखी , जिसमें उन्होंने तर्क दिया कि **पूंजीवाद का समय समाप्त हो चुका है और भविष्य समाजवाद का है** (Nanda, 1998)। रूस की यात्रा के बाद उन्होंने ब्रिटिश प्रचार के विपरीत लिखा—

"सामान्यतः रूस और भारत को सबसे अच्छे पड़ोसी के रूप में रहना चाहिए, जिनके बीच न्यूनतम मतभेद हों। आज जो लगातार मतभेद दिखते हैं, वे इंग्लैंड और रूस के बीच हैं , न कि रूस और भारत के बीच।"

(नेहरू, 1928, पृ. 196–197)

अतः, अधिकांश (यद्यपि सभी नहीं) राजनीतिक समूहों में यह व्यापक सहमति थी कि **समाजवाद और सोवियत मॉडल** जैसे विकासशील देश, भारत के लिए उपयोगी हैं।

भारत–सोवियत प्रगति

वैचारिक और भावनात्मक संबंधों के बावजूद , कई विशेषज्ञ मानते हैं कि भारत को सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित करने का वास्तविक कारण पाकिस्तान और अमेरिका के बीच बढ़ती निकटता थी (Brands, 2004, पृ. 123–143, 145, 54–55, 44–50; Cohen, 2013; Kapur, 1991; McMohan, 1994)। इस संबंध की वास्तविक नींव 1955 में नेहरू की सोवियत संघ यात्रा और इसके बाद सोवियत नेताओं ख्रुश्चेव और बुल्गानिन की भारत यात्रा के दौरान रखी गई (Mastny, 2010, पृ. 53–54)।

1950 के दशक के अंत में भिलाई और बोकारो इस्पात संयंत्रों के निर्माण से शुरू होकर (Dubey, 2012; Haidar, 2015; Mironov, 2008), सोवियत संघ भारत के औद्योगिक विकास में प्रमुख भागीदार बन गया। भारत की प्रसिद्ध सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियाँ जैसे भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (BHEL), ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन (ONGC) और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) सोवियत सहयोग से स्थापित हुईं। 1962 के भारत–चीन युद्ध और 1960 के दशक में बढ़ते चीन–सोवियत मतभेदों ने दोनों देशों को और

INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERPRETATION OBSERVATION & ANALYSIS

निकट ला दिया (Dubey, 2012, पृ. 132; Koithara, 2004)। यह 1971 में भारत–सोवियत शांति, मित्रता और सहयोग संधि (MEA, 1971) के हस्ताक्षर के साथ चरम पर पहुँचा। अगले दो दशकों में दोनों देशों ने घनिष्ठ और बहुआयामी राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य संबंध बनाए। शीत युद्ध के अधिकांश समय में, भारत और सोवियत संघ 1971 की मित्रता और सहयोग संधि से बंधे भू-राजनीतिक सहयोगी थे (Trenin, 2015, पृ. 11)।

1985 में सोवियत नेतृत्व संभालने वाले मिखाइल गोर्बाचेव ने 'पेरेस्त्रोइका' (पुनर्गठन) कार्यक्रम के तहत सोवियत अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज में व्यापक बदलाव की शुरुआत की। अपनी आत्मकथा *द न्यू रशिया* में उन्होंने पेरेस्त्रोइका की प्रासंगिकता पर चर्चा की (Gorbachev, 2015, पृ. 293)। उनकी 'नई सोच' (New Thinking) विदेश नीति में अंतरराष्ट्रीय संबंधों को वैचारिकता से मुक्त करने और अमेरिका तथा पश्चिमी देशों के साथ सहयोगी संबंधों की आवश्यकता पर जोर देती थी (Gorbachev, 2015, पृ. 295)।

अपने पुस्तक *पेरेस्त्रोइका* में उन्होंने 'परस्पर जुड़े, परस्पर निर्भर और मूलतः अभिन्न विश्व' की अवधारणा को विस्तार से प्रस्तुत किया (Gorbachev, 1987, पृ. 139–149)। उनकी 'कॉमन यूरोपियन होम' की अवधारणा ने सोवियत विदेश नीति में तीसरी दुनिया के महत्व को कमजोर किया। वे तीसरी दुनिया के साथ सोवियत संबंधों की प्रकृति, विशेषकर आर्थिक संबंधों को, पुनर्परिभाषित करना चाहते थे (Ovichiniko, 1988, पृ. 13)। उन्होंने जोर दिया कि विकासशील देशों के साथ संबंध पारस्परिक रूप से लाभकारी होने चाहिए ताकि ये देश सोवियत अर्थव्यवस्था पर बोझ न बनें (CPSU रिपोर्ट, 1990)। यह दृष्टिकोण, और साथ ही सोवियत/रूसी-चीनी मेल-मिलाप, भारत–सोवियत संबंधों पर छाया डालने लगा।

वैश्विक व्यवस्था में सोवियत संघ के बाद का रूस— हिन्दी में विस्तृत व्याख्या

सोवियत संघ के विघटन, वारसा संधि के टूटने और गंभीर आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक संकटों के चलते रूस ने अपनी महाशक्ति)Superpower) की स्थिति खो दी)Hansen, 2011, p. 121)।

लेकिन, अपनी कमजोरियों के बावजूद, रूस अभी भी विश्व व्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण है। **रॉबर्ट लेगवॉल्ड** (Robert Legvold) के अनुसार इसके तीन मुख्य कारण हैं — **परमाणु हथियार)Atom), संयुक्त राष्ट्र में वीटो शक्ति)Veto)**और**भौगोलिक स्थिति)Location)**।

1. **परमाणु शक्ति**
   - रूस के पास इतने परमाणु हथियार हैं कि वह अमेरिका को पूरी तरह नष्ट कर सकता है।
   - आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद, रूसी नेतृत्व इस स्थिति को बनाए रखने के लिए दृढ़ है और नए **रणनीतिक सुपर हथियार**विकसित कर रहा है जो अमेरिका की किसी भी मिसाइल रक्षा प्रणाली को बेअसर कर सकते हैं)Pant, 2014; Radyuhin, 2004, p. 68)।
2. **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वीटो शक्ति**
   - स्थायी सदस्य होने के नाते, रूस अंतरराष्ट्रीय निर्णय लेने में प्रमुख भूमिका निभाता है।
   - सीरिया पर प्रस्तावों को रूस ने 8 बार वीटो किया)MacKirdy, 2017)।
   - रूस ईरान, लीबिया, सीरिया जैसे मुद्दों पर स्वतंत्र रुख अपनाता है और एकतरफा निर्णयों, अप्रमाणित निष्कर्षों तथा समय से पहले की गई कार्रवाइयों का विरोध करता है)Nikitin, 2012, pp. 8–9)।
   - 2003 के इराक युद्ध में, रूस और फ्रांस के वीटो की धमकी के कारण अमेरिका सुरक्षा परिषद से सैन्य हस्तक्षेप के समर्थन वाला प्रस्ताव पारित नहीं करा सका)Radyuhin, 2003)।
3. **ऊर्जा संसाधन)Hydrocarbons)**
   - रूस विश्व का सबसे बड़ा हाइड्रोकार्बन उत्पादक है — 15% वैश्विक उत्पादन में इसका योगदान, जिसमें 12.8% तेल और 17.6% प्राकृतिक गैस शामिल है)Gazprombank Report, 2014, pp. 1–2)।
   - प्राकृतिक गैस के भंडार में रूस पहले स्थान पर है)BP-SRWE, 2016a, p. 20) और उत्पादन में भी सबसे आगे)IEA, 2017)।
   - तेल के सिद्ध भंडार में यह आठवें स्थान पर, लेकिन उत्पादन में दूसरे स्थान पर है, और दिसंबर 2016 में औसतन **10.49**

मिलियन बैरल प्रतिदिन के साथ प्रथम स्थान पर रहा)Lui, 2017)।

4. **हथियार निर्यात**
   - स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट)SIPRI) के अनुसार, 2012–2016 में रूस विश्व का दूसरा सबसे बड़ा हथियार निर्यातक रहा, जिसका 23% वैश्विक हथियार निर्यात में योगदान था।
   - इसके 70% निर्यात सिर्फ चार देशों को गए — **भारत, वियतनाम, चीन और अल्जीरिया** (Blanchfield et al., 2017)।
   - रूस अमेरिका और ब्रिटेन के साथ शीर्ष तीन हथियार निर्यातकों में शामिल है)Weir, 2003)।
5. **वैश्विक राजनीति में सक्रिय भूमिका**
   - अमेरिका और यूरोप द्वारा हाशिये पर डालने के प्रयासों के जवाब में रूस ने कई मोर्चों पर वापसी की —
     - ईरान के परमाणु समझौते में बातचीत और क्रियान्वयन में अहम भूमिका।
     - सीरिया में सैन्य हस्तक्षेप।
     - अफगानिस्तान में बढ़ती भागीदारी)Raghavan, 2016)।

संक्षेप में, **रूस परमाणु शक्ति, ऊर्जा संसाधन, हथियार निर्यात और संयुक्त राष्ट्र में प्रभाव के चलते, कमजोरियों के बावजूद, आज भी विश्व राजनीति का एक प्रमुख खिलाड़ी है।**

शीतयुद्ध के बाद का भारत–रूस संबंध — हिन्दी में विस्तृत व्याख्या

सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस की नई सरकार का ध्यान मुख्य रूप से **आंतरिक समस्याओं** पर था। साम्यवाद के पतन के बाद बनी नई राजनीतिक–आर्थिक व्यवस्था और पश्चिमी देशों के साथ सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता ने राष्ट्रपति **बोरिस येल्त्सिन** को अमेरिका और पश्चिम से घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए प्रेरित किया)Yeltsin, 1993)।

1. प्रारंभिक गिरावट)1991–1993)

- विदेश मंत्री **आंद्रे कोज़ीरेव** ने "अटलांटिस्म" नीति अपनाई, जिसमें माना गया कि लोकतांत्रिक रूस और पश्चिम स्वाभाविक साझेदार हैं।
- इस दौरान भारत–रूस संबंध कमजोर पड़े।
- रूस में यह तर्क दिया गया कि भारत के साथ "विशेष संबंध" रखने से पाकिस्तान जैसे अन्य दक्षिण एशियाई देशों के साथ संबंध बिगड़ सकते हैं)Kaushik, 2003)।
- जनवरी 1992 में भारत के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल को न तो राष्ट्रपति और न ही विदेश मंत्री से मिलने का अवसर मिला।

2. नीतिगत बदलाव और संबंधों की बहाली)1993–1997)

- 1990 के मध्य तक, पश्चिम से अपेक्षित भारी आर्थिक सहायता न मिलने और राष्ट्रवादी आलोचना के बाद रूस ने अपनी पश्चिम केन्द्रित-नीति बदल दी।
- **जनवरी 1993** में राष्ट्रपति येल्त्सिन की भारत यात्रा ने लंबे ठहराव को समाप्त किया।
  - **10 अहम समझौते** हुए, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण **मैत्री और सहयोग संधि** थी, जिसने 1971 की संधि को प्रतिस्थापित किया।
  - सुरक्षा धारा हटाई गई, और ऋण व रुपये रूबल विनिमय दर के विवाद-सुलझाए गए।
  - अमेरिका के विरोध के बावजूद भारत को **क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन** देने की पुष्टि की गई।
- **1994 में पी.वी. नरसिम्हा राव** की यात्रा में "मॉस्को घोषणा" पर हस्ताक्षर हुए, जिसमें आक्रामक राष्ट्रवाद, धार्मिक उग्रवाद और अलगाववाद के खतरों के प्रति चेतावनी दी गई।
- **1997 में देवेगौड़ा** की यात्रा में सैन्य सहयोग और परमाणु रिएक्टर आपूर्ति पर सहमति बनी।

3. प्रिमाकोव काल — व्यावहारिक और स्वतंत्र विदेश नीति)1996–1999)

- **येवगेनी प्रिमाकोव** (विदेश मंत्री 1996, प्रधानमंत्री 1998) ने रूस की नीति को पश्चिम से हटाकर **यूरेशियाकेन्द्रित-**बना दिया।
- **प्रिमाकोव सिद्धांत:**
  1. वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकरण
  2. बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का निर्माण
  3. अमेरिका की एकतरफा नीतियों का विकल्प खड़ा करना
- 1998 में भारत यात्रा के दौरान:

- दीर्घकालिक सैन्य तकनीकी सहयोग-कार्यक्रम2010 तक के लिए तय हुआ।
- **मॉस्को–बीजिंग–दिल्ली रणनीतिक त्रिकोण**का प्रस्ताव रखा , ताकि अमेरिका की एकतरफा कार्रवाइयों से उत्पन्न असंतुलन को ठीक किया जा सके।

4. रणनीतिक साझेदारी का दौर)2000 के बाद(

- **अक्टूबर 2000**में राष्ट्रपति**व्लादिमीर पुतिन**की यात्रा के दौरान "रणनीतिक साझेदारी की घोषणा " पर हस्ताक्षर हुए।
  - बहुध्रुवीय विश्व संरचना बनाने और सभी राष्ट्रों की समान संप्रभुता पर जोर।
  - वैज्ञानिक–प्रौद्योगिकीय सहयोग का दीर्घकालिक कार्यक्रम और सैन्य – तकनीकी सहयोग के लिए अंतर सरकारी-आयोग की स्थापना।
  - अफगानिस्तान पर संयुक्त कार्यदल का गठन।
  - सालाना शिखर वार्ता की परंपरा स्थापित।
- **नवंबर 2001 में अटल बिहारी वाजपेयी**की मॉस्को यात्रा में आगे के रक्षा , तकनीकी और आर्थिक समझौतों को मजबूती दी गई।

भारत–रूस संबंध शीतयुद्ध के बाद का दौर :

1. सोवियत संघ के विघटन के बाद शुरुआती दौर)1991–1995)

- 1991 में सोवियत संघ के टूटने के बाद नई रूस सरकार आंतरिक राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं में उलझी रही।
- राष्ट्रपति**बोरिस येल्त्सिन**ने अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने को प्राथमिकता दी।
- विदेश मंत्री **आंद्रेई कोज़िरेव** ने "अटलांटिकिस्ट" नीति अपनाई , जिसमें रूस और पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों को प्राकृतिक साझेदार माना गया।
- इस दौरान भारत –रूस संबंध कमजोर हुए। 1992 में भारतीय उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल को न राष्ट्रपति से मिलने का अवसर मिला, न विदेश मंत्री से।
- रूसी मीडिया ने इसे "भारत–रूस संबंध चौराहे पर" बताया।
- रूस के उप विदेश मंत्री-**जॉर्जी कुनाद्ज़े**ने भारत के साथ "विशेष संबंध" रखने का विरोध किया, ताकि पाकिस्तान जैसे अन्य दक्षिण एशियाई देशों के साथ संबंध न बिगड़ें।

---

2. मध्य 1990 के दशक में बदलाव

- पश्चिम से अपेक्षित आर्थिक सहायता न मिलने और घरेलू आलोचना के कारण रूस ने अपनी विदेश नीति में बदलाव किया।
- 1993 में राष्ट्रपति येल्त्सिन ने भारत की यात्रा की और 10 महत्वपूर्ण समझौते हुए:
  - **नया मित्रता और सहयोग संधि** (1971 की संधि का स्थान लिया , सुरक्षा प्रावधान हटा दिए गए(
  - सैन्य सहयोग पर संधि
  - क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन भारत को देने की पुष्टि (अमेरिकी आपत्ति के बावजूद)
- 1994 में पीएम नरसिंह राव की मास्को यात्रा के दौरान "**बहु जातीय राज्यों के-हितों की रक्षा पर मास्को घोषणा**" हुई।
- 1997 में पीएम देवगौड़ा की यात्रा के दौरान सैन्य सहयोग और परमाणु रिएक्टरों पर सहमति बनी।

3. प्रिमाकोव युग)1996–1999)

- विदेश मंत्री (बाद में प्रधानमंत्री)**येवगेनी प्रिमाकोव**ने 'बहुध्रुवीय विश्व ' और अमेरिका के प्रभुत्व के विरुद्ध संतुलन बनाने की नीति अपनाई।
- पुराने मित्र देशों जैसे भारत के साथ संबंध मजबूत करने पर जोर।
- 1998 में भारत यात्रा के दौरान दीर्घकालिक सैन्य - आर्थिक समझौते- तकनीकी सहयोग और व्यापार हुए।
- उन्होंने "**मास्को–बीजिंग–दिल्ली त्रिकोण** " का प्रस्ताव दिया।

4. रणनीतिक साझेदारी का दौर)2000–2010)

- 2000 में राष्ट्रपति**व्लादिमीर पुतिन**की भारत यात्रा में "**रणनीतिक साझेदारी पर घोषणा**" हुई।
- हर साल**वार्षिक शिखर सम्मेलन**करने का निर्णय।
- 2001 में पीएम अटल बिहारी वाजपेयी की मास्को यात्रा में "अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद पर घोषणा"।

- 2002 में पुतिन की भारत यात्रा में "दिल्ली घोषणा" और वैज्ञानिक –तकनीकी सहयोग पर संयुक्त घोषणा।
- 2003 में वाजपेयी ने संबंधों को "आकाश है सीमा" कहा।
- 2004–2007 में रक्षा, ऊर्जा, परमाणु रिएक्टर और संयुक्त सैन्य अभ्यास के समझौते हुए।

5. विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी)2010–वर्तमान(

- 2010 में रणनीतिक साझेदारी को "**विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी**" का दर्जा।
- 2016 गोवा शिखर सम्मेलन में 19 समझौते।
- 2017 में पीएम मोदी सेंट पीटर्सबर्ग आर्थिक मंच के मुख्य अतिथि बने।

संयुक्त राष्ट्र में भारत–रूस सहयोग

- स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई, लेकिन 1970 के दशक से सोवियत संघ की ओर झुकाव बढ़ा।
- यूएन में सोवियत संघ ने भारत का समर्थन किया कश्मीर), गोवा, बांग्लादेश युद्ध।(
- भारत ने भी सोवियत रूस का समर्थन किया/ अफ़ग़ानिस्तान), चेकोस्लोवाकिया, सीरिया, म्यांमार आदि मामलों में।(
- 2014 में क्रीमिया मुद्दे पर भारत ने रूस के खिलाफ मतदान से परहेज किया।
- दोनों देश बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और यूएन सुधारों के पक्षधर हैं।

भारत–रूस सहयोगवैश्विक मुद्दों पर :

1. आतंकवाद

- 11 सितंबर 2001 के आतंकवादी हमलों के बाद , **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद)UNSC)नेसंकल्प 13737**अपनाया।
- भारत और रूस ने संयुक्त राष्ट्र के साथ खड़ा होकर**एंटीटेररिज्म कानून-**लागू किए।
    - भारत:**Prevention of Terrorism Act (POTA), 2002**
    - रूसराष्ट्रपति अध्यादेश :

2. ईरान का परमाणु मुद्दा

- ईरान पर 2006–2011 तक**यूएन संकल्पों** के तहत प्रतिबंध लगे।
- रूस ने इन प्रतिबंधों का समर्थन किया , लेकिन जब अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा ने नए **एकतरफा प्रतिबंध**लगाए, रूस ने विरोध किया। (और चीन)
- रूस का मानना था कि ये प्रतिबंध "ईरान में शासन परिवर्तन का उपकरण" बन सकते हैं।
- भारत ने भी ऐसी अमेरिकी –पश्चिमी प्रस्तावित संकल्पों के खिलाफ मतदान किया।

3. पैलेस्टाइन मुद्दा

- भारत और रूस ने ऐतिहासिक रूप से **इस्लामिक देशों**का समर्थन किया , विशेषकर**पैलेस्टाइन**के मामले में।
- भारत ने कई बार **इजरायल के विरोधी प्रस्तावों** का समर्थन किया, जैसे कि:
    - 2017 में**UNGA जेरूसलम प्रस्ताव**
    - UNHRC में इजरायल के बस्तियों और पैलिस्टिनी अधिकारों पर चार प्रस्ताव
- रूस ने भी UNHRC में ऐसे प्रस्तावों का समर्थन किया।

4. परमाणु प्रसार और निरस्त्रीकरण

- रूस ने भारत की चिंताओं और दृष्टिकोण का समर्थन किया।
- पुतिन के अनुसार, परमाणु निरस्त्रीकरण पर**"गंभीर और बिना दोहरे मानक के वार्ता"**होनी चाहिए।
- 2014 में UNGA ने**Outer Space में No First Placement of Arms**पर रूस का प्रस्ताव अपनाया, भारत ने समर्थन किया।
- भारत का मानना है कि**अंतरिक्ष युद्ध का क्षेत्र न बने**, बल्कि सहयोग का क्षेत्र बने।

5. पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन

- भारत और रूस दोनों **ग्रीनहाउस गैस)GHG) उत्सर्जक**देशों में शीर्ष पर हैं।
- 2017 में पीएम मोदी की रूस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने **प्राकृतिक गैस के अधिक उपयोग** और**ऊर्जा कुशल तकनीकों के आदान प्रदान-**पर सहमति जताई।

INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERPRETATION OBSERVATION & ANALYSIS

- दोनों देश **पेरिस समझौते)Paris Agreement)**के सदस्य हैं और GHG उत्सर्जन घटाने के लिए साझा कदम उठा रहे हैं।
- रूस के पास **सौर तकनीक)Photovoltaic/HJT)**में विशेषज्ञता है, जो भारत की सोलर इंडस्ट्री के लिए लाभकारी हो सकती है।
- दोनों देश ईंधन कुशल तकनीक और सतत विकास-के लिए सहयोग कर सकते हैं।
- उदाहरण भारत का पहला :**स्वदेशी पोलियो वैक्सीन**रूस के साथ दीर्घकालिक सहयोग का परिणाम था।

6. वैश्विक मंचों पर सहयोग

- रूस और भारत विभिन्न संगठनों में सहयोग करते हैं:
    - **UN, BRICS, SCO, Russia–India–China त्रिपक्षीय मंच**
- रूस ने भारत का **UN Security Council में स्थायी सीट** , **Nuclear Suppliers Group**, और**APEC**में सदस्यता समर्थन किया।
- क्षेत्रीय मुद्दों पर भारत और रूस की समान सोच:
    - अफगानिस्तान, मध्य एशिया, ईरान और पश्चिम एशिया

7. मुख्य चुनौती

- आज की चुनौती है कि भारत और रूस **साझा लक्ष्य और रणनीति**तय करें।
- दोनों देशों की मजबूत नेतृत्व टीम इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए **संगठित रणनीतियों**पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

भारत के लिए रूस का महत्व

1. रूस की प्रासंगिकता और पड़ोसी भूमिका

- नेहरू ने 1928 में कहा था कि रूस हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह **एक शक्तिशाली पड़ोसी** है जो दोस्त बन सकता है या चुनौती पेश कर सकता है।
- भावनात्मक और ऐतिहासिक जुड़ाव के अलावा , रूस के साथ **व्यावहारिक और रणनीतिक कारण** भी हैं।

2. कश्मीर और आतंकवाद पर समर्थन

- 1955 में कश्मीर में भारत की यात्रा पर **ख्रुश्चेव**ने आश्वासन दिया कि कश्मीर में किसी भी समस्या पर**मॉस्को मदद के लिए तैयार**है।
- इसके अनुरूप, **संसद में रूस सोवियत संघ ने/ बार-बार कश्मीर मुद्दे पर वीटो का इस्तेमाल**किया।
    - उदाहरण :23 जुलाई 1962 में सोवियत वीटो ने UN के प्रस्ताव को रोका, जिससे भारत का पक्ष मजबूत हुआ।
- रूस ने लगातार **भारत के कश्मीर और सीमा पार आतंकवाद के दृष्टिकोण** का समर्थन किया और पाकिस्तान को धार्मिक उग्रवाद और आतंकवाद फैलाने का जिम्मेदार माना।
- रूस की नीति स्पष्ट है कि कश्मीर **भारत का संप्रभु अधिकार**है।
- विशेषज्ञ मानते हैं कि पाकिस्तान रूस भारत-रणनीतिक साझेदारी को प्रभावित नहीं कर सकता।

3. सुरक्षा परिषद सदस्यता के लिए समर्थन

- सोवियत संघ ने भारत को **तीसरे विश्व और गैर -संरेखित आंदोलन में नेतृत्व**की भूमिका और वैश्विक प्रभावशाली खिलाड़ी के रूप में महत्व दिया।
- यह समर्थन आज भी**पोस्टसोवियत रूस-**में जारी है।
- भारत की **संशोधित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद)UNSC) में स्थायी सदस्यता** के लिए रूस सबसे स्पष्ट समर्थक है।
- 1 जून 2017 को मोदी पु-तिन वार्ता के बाद जारी**विजन दस्तावेज़**में रूस ने भारत की स्थायी सीट के लिए समर्थन दोहराया।

निष्कर्ष

- रूस भारत का**भरोसेमंद रणनीतिक सहयोगी**है।
- यह सहयोग**सुरक्षा, आतंकवाद, कश्मीर और वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका**सुनिश्चित करता है।
- भारत के लिए रूस का महत्व केवल ऐतिहासिक या भावनात्मक नहीं , बल्कि**रणनीतिक, राजनीतिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य**में भी निर्णायक है

भारत–रूस रक्षा सहयोग

1. रूस – भारत का प्रमुख हथियार आपूर्तिकर्ता

- 1960 के दशक से रूस सोवियत संघ/**भारत का सबसे बड़ा और भरोसेमंद हथियार आपूर्तिकर्ता**है।

- यह भारत की रक्षा जरूरतों का **70% से अधिक**पूरा करता है:
    - सेना के लिए 75%
    - वायु सेना के लिए 80%
    - नौसेना के लिए 85%
- हाल के आंकड़ों के अनुसार , भारत**2000–2016**के बीच विश्व में हथियारों के सबसे बड़े आयातकों में से एक था, जिसमें रूस ने**72% आपूर्ति**की।

2. साझा उत्पादन और तकनीकी सहयोग

- रक्षा सहयोग केवल खरीद तक सीमित नहीं है , बल्कि भारत में **लाइसेंस आधारित उत्पादन** भी शामिल है:
    - उदाहरण:**Mig-27M, Sukhoi-30MKI, T-72 टैंक**।
- **संयुक्त अनुसंधान और विकास**)**R&D**)तथा सेवा-सेवा सहयोग भी किया जाता है।-से
- **BrahMos मिसाइल परियोजना**: भारत और रूस के संस्थानों का सहयोग , सुपरसोनिक यूनिवर्सल एंटीशिप क्रूज़ मिसाइल का विकास।-
- **Su-30MKI**और**BrahMos**परियोजनाएँ नए सहयोग के मॉडल हैं। भविष्य में **पाँचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान** और**मध्यम सैन्य परिवहन विमान**योजनाबद्ध हैं।

3. सैन्य उपकरण और आधुनिक प्रणालियाँ

- नौसेना:**BrahMos मिसाइल**को 300 किमी तक की रेंज के साथ तैनात करने का अधिकार।
- मिसाइल की विशेषताएँ :200–300 किग्रा वारहेड, 2.8 मैक की गति, अमेरिकी Tomahawk से श्रेष्ठ।
- 16वें भारत –रूस अंतरसरकारी सैन्य तकनीकी आयोग)2000 में स्थापित:में निर्णय (
    - **S-400 एयर डिफेंस सिस्टम**की आपूर्ति
    - **Project 1135.6 फ्रिगेट्स**
    - **Ka-226T हेलीकॉप्टर**का भारत में निर्माण पहली)'Make in India' परियोजना(

4. संयुक्त सैन्य अभ्यास

- **INDRA-2016**: रूस में आयोजित
- **INDRA-2017**: प्रथम त्रि सेवा अभ्यास-, Vladivostok, रूस

- उद्देश्य भारत की :**सैन्य, औद्योगिक और तकनीकी क्षमता**को बढ़ाना।

5. चुनौतियाँ और चिंता

- रूस का भारत में **हथियार बाजार का हिस्सा घट रहा है**।
- कारण:
    - भारत का **स्वदेशी रक्षा उद्योग** विकसित करने की इच्छा
    - खरीद में**विविधता**
    - अमेरिकी हथियार निर्यातकों का तेजी से प्रवेश
    - उच्च मूल्य और तकनीकी उन्नत विकल्पों की मांग

भारत–रूस संबंधों में चिंता के कारण

1. चीन–रूस निकटता और पाकिस्तान–रूस संबंध

- **क्रिमिया का एकीकरण**और पूर्वी यूक्रेन में संघर्ष के बाद रूस ने अपनी विदेश नीति में **'एशिया पर झुकाव**' अपनाया और चीन के साथ गहरा सहयोग शुरू किया।
- रूस द्वारा चीन को **सुपरसोनिक हथियार और तकनीक हस्तांतरण**करना भारत के लिए चिंता का विषय है।
- भारत को डर है कि चीन के साथ रूस का सामंजस्य पाकिस्तान को भी लाभ पहुंचा सकता है।
- रूस–चीन संबंध सुविधा पर आधारित साझेदारी है, न कि पूर्ण सैन्य गठबंधन।

2. रूस और पाकिस्तान के बढ़ते संबंध

- अफगानिस्तान में अमेरिकी वापसी)2014 के बाद (ने क्षेत्र में शक्ति शून्य पैदा किया।
- रूस ने पाकिस्तान को अफगानिस्तान मुद्दे में भागीदारी देने का समर्थन किया।
- दिसंबर 2016 में रूस–चीन–पाकिस्तान त्रिपक्षीय सम्मेलन, फरवरी 2017 में छह राष्ट्रों भारत), ईरान, पाकिस्तान, चीन, अफगानिस्तानकी बैठक। (
- रूस–पाकिस्तान सैन्य अभ्यास:
    - **Friendship-2016** (पहला संयुक्त अभ्यास, पाकिस्तान में(
    - 2017 में रूस में अगला अभ्यास

3. चिंताएँ और नीति संतुलन

- रूस का तालिबान के साथ संपर्क भारत के लिए चिंता का विषय।
- भारत को रूस पर भरोसा करते हुए रणनीति तैयार करनी होगी ताकि अन्य देशों यूएसए), चीन, पाकिस्तान के साथ (संतुलन बना रहे।
- रूस–पाकिस्तान संबंध **पूरी रणनीतिक साझेदारी में बदलने की संभावना नहीं** है क्योंकि:
  - भारत रूस के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है
  - पाकिस्तान का अमेरिका और चीन के साथ संबंध

4. भारत-यूएसए और भारत–रूस संबंध

- भारत हाल के वर्षों में अमेरिका के करीब आया है।
- लेकिन:
  - अमेरिका कभी भी भारत को **संवेदनशील उच्च तकनीक हथियार** नहीं देगा।
  - अमेरिका अक्सर भारत के आंतरिक मामलों पर टिप्पणी करता है ; रूस ऐसा कभी नहीं करता।
- भारत की नीति :**पुराने दोस्त को प्राथमिकता** देना)PM मोदी :"An old friend is better than two new friends")

भारत–रूस व्यापार और आर्थिक संबंध

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- भारत और सोवियत संघ के बीच **महत्वपूर्ण आर्थिक और व्यापारिक संबंध** थे।
- ये संबंध विशेष **सरकारी समझौतों** और व्यवस्थाओं पर आधारित थे।

2. संदर्भ में परिवर्तन

- सोवियत संघ का विघटन और रूस का **सोशलिस्ट कमांड अर्थव्यवस्था से मार्केट अर्थव्यवस्था** में संक्रमण।
- इसी समय भारत ने **आर्थिक उदारीकरण** (Economic Liberalization) शुरू किया।
- इन परिवर्तनों ने **दोनों देशों के विदेश आर्थिक संबंधों** को प्रभावित किया।

3. व्यापार में गिरावट

- सोवियत संघ के विघटन के बाद द्विपक्षीय व्यापार में **तेजी से गिरावट** आई।
- भारत और रूस दोनों को नए आर्थिक और वैश्विक बाजार के **परिप्रेक्ष्य में अपने व्यापारिक हितों का पुनर्मूल्यांकन** करना पड़ा।

यदि आप चाहें तो मैं इसके आगे का पूरा **भारत–रूस व्यापार और आर्थिक सहयोग)1990 के बाद से 2017 तक(** का विस्तृत हिंदी सारांश तैयार कर सकता हूँ , जिसमें **ऊर्जा, निवेश, तकनीकी सहयोग, और व्यापारिक समझौते** शामिल होंगे।

भारत–रूस आर्थिक और व्यापारिक संबंध चुनौतियाँ और : प्रयास

1. मुद्रा आधारित व्यापार और ऋण समझौते

- भारत और रूस ने **मुद्रा आधारित व्यापार समझौता** किया)Baru, 2007)।
- इसमें भारत द्वारा पूर्व सोवियत संघ से लिए गए **सिविलियन और सैन्य ऋणों का पुनर्भुगतान** शामिल था।
- समझौते के अनुसार , रूस को भारत से वार्षिक लगभग **US$ 1 अरब के सामान और सेवाओं का आयात** करना था, 12 वर्षों के लिए)1994 से और (इसके बाद33 वर्षों तक कम मात्रा में।

2. वर्तमान व्यापार स्थिति

- विभिन्न शिखर बैठकों में कई महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय हुए, पर वर्तमान **वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार अभी भी US$10 अरब से कम** है)Vasudevan, 2015)।
- मुख्य समस्याएँ:
  - रूस में बाजार विश्लेषण की कमी
  - लंबी परिवहन दूरी
  - अपर्याप्त बैंकिंग व्यवस्था
  - टैरिफ नीतियाँ और विनियामक प्रणाली
  - गुणवत्ता और मूल्य के संदर्भ में मजबूत प्रतिस्पर्धा
  - वितरण प्रणाली की कमी
- भारत की कृषि प्रधान और कम तकनीकी छवि के कारण **सॉफ्टवेयर, मशीनरी और ऑटो स्पेयर पार्ट्स** का रूसी बाजार में कम असर।
- ऋण पुनर्भुगतान व्यवस्था ने द्विपक्षीय व्यापार को प्रभावित किया।

INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERPRETATION OBSERVATION & ANALYSIS

3. व्यापार बढ़ाने के प्रयास

- **इंडो) सरकारी आयोग-रूसी अंतर-IRIGC)** 1992 में स्थापित किया गया।
- 22वीं बैठक**13 सितंबर 2016**को नई दिल्ली में हुई।
- दिसंबर 2014 में**2025 तक US$30 अरब व्यापार लक्ष्य**तय किया गया।

4. चुनौतियों का विश्लेषण

- 2016 में द्विपक्षीय व्यापार घटकर **US$7.71 अरब**रह गया।
- प्रमुख समस्याएँ)Fulkant Jha, 2016):
    - जानकारी का अभाव दोनों देशों के : उत्पादों के बारे में अपर्याप्त जानकारी
    - विशेषज्ञों की कमी भारतीय विशेषज्ञ : रूस में और रूसी विशेषज्ञ भारत में रहने को तैयार नहीं
    - नकारात्मक धारणाएँ दोनों देशों के : उत्पादों के प्रति रूढ़िवाद
    - कस्टम और नौकरशाही में बाधाएँ
- विशेषज्ञों का सुझाव:**पुराने अनुभव भविष्य के लिए मार्गदर्शक नहीं**, नए दृष्टिकोण और रणनीति की आवश्यकता।

भविष्य के सहयोग की संभावनाएँभारत :–रूस

1. ऊर्जा सहयोग

- भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और **2030 तक तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता** बनने की संभावना है।
- गैस, तेल और कोयले की मांग क्रमशः 183%, 121% और 108% तक बढ़ने का अनुमान।
- रूस के विशाल **तेल और गैस भंडार**, थर्मल, हाइड्रो और न्यूक्लियर ऊर्जा में विशेषज्ञता भारत के लिए महत्वपूर्ण।
- पूर्व सोवियत संघ ने भारत में कई थर्मल और हाइड्रो परियोजनाओं का निर्माण किया।
- संभावित ऊर्जा सहयोग:
    - **नाभिकीय ऊर्जा**, हाइड्रोकार्बन, LNG आपूर्ति, पाइपलाइन और नवीकरणीय ऊर्जा।
    - भारतीय कंपनियों का रूसी तेल क्षेत्र में निवेश :Tas-Yuryakh, Vankor और Essar Oil में भागीदारी।
    - रूस की मदद से **न्यूक्लियर ऊर्जा उत्पादन**में भारत की महत्वाकांक्षाएँ कुडनकुलम परियोजना)Units 1–6)।

2. अंतरराष्ट्रीय उत्तर) दक्षिण परिवहन मार्ग-INSTC)

- **INSTC**: भारत–रूस–ईरान सहयोग, एशिया और यूरोप के बीच वैकल्पिक व्यापार मार्ग।
- इससे भारत का **मध्य एशिया और उत्तरी यूरोप** से कनेक्टिविटी बेहतर होगी।
- अनुमानित क्षमता:**20–30 मिलियन टन माल प्रति वर्ष**।
- अन्य पहल:
    - ग्रीन कॉरिडोर (कस्टम सुविधा)
    - समर्पित मालगाड़ी कॉरिडोर
    - रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण
    - रेलवे कर्मियों का प्रशिक्षण

3. निष्कर्ष

- **संपर्क का इतिहास**: शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के बीच ऐतिहासिक और सुरक्षा - आधारित संबंध।
- **समान वैश्विक दृष्टिकोण** : पोस्ट सोवियत रूस के-साथ कई वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर समान रुख।
- **व्यापारिक संबंध**: अभी तक सीमित , लेकिन**ऊर्जा सुरक्षा और नवाचार**में संभावनाएँ उज्ज्वल।
- **विशेष गुण** : रूस ने भारत के **अंतर्राष्ट्रीय और एशियाई मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका**का लगातार समर्थन किया , जिसे भारत ने भी सम्मान और सहयोग के साथ reciprocate किया।

संदर्भ सूची

1. Ghosh, 1993; Chandra, 1975; Ganguli, 1964.
2. Ghosh, 2014.
3. प्रमुख नेताआचार्य नरेंद्र देव :, जय प्रकाश नारायण, यूसुफ़ मेहरअली , राम मनोहर लोहिया , मीनू मसानी।)The Socialist Party (India) Is Formed, 2011); Mohan, 2009; Nauriya, 2014; Srivastav, 2015.
4. Adhkari, 1922, Vol. 1; देखें Adhkari, 1922, Vol. 2.
5. Nayar, 2000, “भगत सिंह ने इसके नाम में ‘सोशलिस्ट’ शब्द जोड़ा।” देखें Maclean, 2014.

6. भारत और पाकिस्तान के सापेक्ष उपयोगिता पर चर्चा के लिए देखें :CDPSP, 1996.
7. देखें:**UN Resolution 1373** – UN Press Release
8. रूस ने भी 1373 संकल्प को अपनाया और इसे राष्ट्रीय कानून में 10 जनवरी 2002 को राष्ट्रपति डिक्री No. 6 द्वारा लागू किया।
9. ईरान पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के चार दौर के प्रतिबंध:
   - Resolution 1696 (July 2006) – Enrichment समाप्त करने की मांग
   - Resolution 1737 (December 2006) – पहला दौर
   - Resolution 1747 (March 2007) और 1803 (March 2008) – दूसरा और तीसरा दौर
   - Resolution 1929 (June 2010) – चौथा दौर

   (BBC, 26 July 2010) – BBC URL
10. UNHRC मत परिणाम और दस्तावेज़:
    - 31वीं सत्र , Israeli settlements in Occupied Palestinian Territory, including East Jerusalem and in occupied Syrian Golan (A/HRC/31/L.39)

11. • Adhkari, G. (1922). *Documents of the history of communist party of India* (Vol. 1, pp. 1917–1922). New Delhi: People's Publishing House.
12. • Adhkari, G. (1922). *Documents of the history of communist party of India* (Vol. 2, pp. 1917–1922). New Delhi: People's Publishing House.
13. • Ahluwalia, S. S. (2015). Russia-India security partnership: Gas, guns and atoms for peace. In N. Unikrishnan, A. Kamalakaran, M. Guruswamy, & S. S. Ahluwalia (Eds.), *A new era: India-Russia ties in the 21st century* (pp. 44–46). Moscow: Rossiyskaya Gazeta.
14. • Ahluwalia, S. S. (1964, March 7). A letter from New York. *The Economic Weekly*. Retrieved August 5, 2017, from http://www.epw.in/system/files/pdf/1964_16/10/what_india_can_do_about_kashmir.pdf
15. • Arun, S. (2017, April 9). Russia—A forgotten trade partner. *The Hindu*, New Delhi. Retrieved August 29, 2017, from http://www.thehindu.com/business/Economy/russiaa-forgotten-trade-partn0er/article17898013.ece
16. • Bana, S. (2016, December 14). Armed to the Hilt: Indian Navy's anti-ship missiles. *Indian Defence Review*. Retrieved August 7, 2017, from http://www.indiandefencereview.com/armed-to-the-hilt-indian-navys-anti-ship-missiles/
17. • Baru, S. (2007). *Strategic consequence of India's economic performance*. Abingdon, Oxon, UK: Routledge.
18. • BBC. (2007, January 25). India and Russia in nuclear deal. *BBC Home*. Retrieved August 28, 2017, from http://news.bbc.co.uk/1/hi/world/south_asia/6298071.stm
19. • Blagov, S. (2003). Russia eyes billions in transport connection. *Asia Times*. Retrieved August 13, 2017, from http://www.atimes.com/atimes/Central_Asia/EE08Ag01.html
20. • Blanchfield, K., Wezeman, P. D., & Wezeman, S. T. (2017). *The state of major arms transfers in 8 graphics*. Sweden: Stockholm International Peace Research Institute. Retrieved June 5, 2017, from https://www.sipri.org/commentary/blog/2017/state-major-arms-transfers-8-graphics
21. • BP-Statistical Review of World Energy (BP-SRWE). (2016a). Retrieved June 5, 2017, from http://www.bp.com/en/global/corporate/energy-economics/statistical-review-of-world-energy.html
22. • BP-Statistical Review of World Energy (BP-SRWE). (2016b). Retrieved June 7, 2017, from http://www.bp.com/content/dam/bp/pdf/energy-economics/statistical-review-2016/bp-statistical-review-of-world-energy-2016-full-report.pdf
23. • Borger, J. (2011, November 9). Russia rejects further sanctions of Iran over nuclear programme. *The Guardian*. Retrieved March 7, 2018, from https://www.theguardian.com/world/2011/nov/09/russia-rejects-iran-sanctions-nuclear
24. • Bradley, B. (1938, April). The Haripura session. *Labor Monthly*, 4. Retrieved August 19, 2017, from https://www.marxists.org/history/international/comintern/sections/britain/periodicals/labour_monthly/1938/04/x01.htm